Navchetana Homilies

Feb 17, 2019

Deut 14:22, 15:4

Is 42: 5-9

1 Tim 6:17-21

Mt 8:5-13

प्रकटीकरण काल का सातवाँ रविवार

सुसमाचार पाठ – येसु कफरनाहूम में प्रवेश कर ही रहे थे कि एक शतपति उनके पास आया और उनसे यह निवेदन किया– "प्रभु! मेरा नौकर घर में बीमार पड़ा हुआ है। उसे लक़वा हो गया है और वह घेर पीड़ा सह रहा है।"

ईसा ने उससे कहा मैं आकर उसे चंगा कर दूँगा।

शतपति ने उत्तर दिया– "प्रभु! मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे यहाँ आयें। आप एक ही शब्द कह दीजिए और मेरा नौकर चंगा हो जायेगा।"

मैं एक छोटा सा अधिकारी हूँ। मेरे अधीन सिपाही रहते हैं। जब मैं एक से कहता हूँ 'जाओ' तो वह जाता है और दूसरे से 'आओ' तो वह आता है और अपने नौकर से 'यह करो' तो वह यह करता है।"

ईसा यह सुनकर चकित हो गये और उन्होंने अपने पीछे आने वालों से कहा– "मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ इस्त्राएल में भी मैंने किसी में इतना दृढ़ विश्वास नहीं पाया।"

मैं तुम से कहता हूँ, बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर इसहाक और याकूब के साथ स्वर्गराज्य के भोज में सम्मिलित होंगे।

परन्तु राज्य की प्रजा को बाहर अन्धकार में फेंक दिया जायेगा। वहाँ वे लोग रोयेंगे और दाँत पीसते रहेंगे।

शतपति से ईस ने कहा– "जाइए आपने जैसा विश्वास किया। वैसा ही हो जाये। और उस घड़ी उसका नौकर चंगा हो गया।"

जैसा आपने विश्वास किया

विश्वास यह मानना नहीं है कि ईश्वर कर सकता है, विश्वास यह मानना है कि ईश्वर मेरे लिए करेगा।

विश्वास आशावान है। विश्वास के बिना आप प्रत्याशा नहीं रख सकते, और आशा के बिना आपका विश्वास जीवित नहीं है।

सुसमाचार में हमने शतपति के नौकर की चंगाई के बारे में सुना।

शतपति का नौकर बीमार था, वह घोर पीड़ा सह रहा था। शतपति ने येसु के बारे में सुना था और यह भी सुना था कि वह रोगियों को चंगा करता है। शतपति कुछ इस प्रकार भी सोच सकता था– "येसु के पास जाने से कोई फायदा नहीं होगा। वह मेरी मदद नहीं करेगा। वह यहूदी है और यहूदी लोग रोमियों को दुश्मन की निगाहों से देखते हैं।" ऐसा सोचकर और येसु अपने पड़ोस में आया है, यह जानकर भी अपनी निराशावादी सोच में डुबकर वह अपने घर भी बैठ सकता था। ऐसे निराशावादी लोगों की कोई कहानी सुसमाचारों में नहीं मिलती।

शतपति दूसरे प्रकार से भी सोच सकता था जैसे– "कितने ही नौकर बीमार होते हैं, और समय के अनुसार ठीक भी हो जाते हैं। यह भी अपने आप ठीक हो जायेगा। मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं हैं।" यही आशा में वह अपने घर में बैठ सकता था। इसी प्रकार अपनी आशा रखकर घर में बैठे रहने वालों की भी कहानियाँ हम सुसमाचार में नहीं पढ़ते।

इन दोनों प्रकार के लोगों में प्रत्याशा नहीं है। वे अपने अहम् में ही केंद्रित जीवन शैली के लोग हैं। वे अपने आपसे ही बाहर नहीं जाते। उन्हें किसी की भी मदद की जरूरत नहीं हैं। ऐसे लोगों की कहानियाँ हम चारों सुसमाचारों में नहीं पढ़ते।

लेकिन बाइबिल में कई ऐसे लोगों की कहानियाँ है, जो बीमारियों के दर्द में है, जो दूसरों के प्रति चिंता करते हैं, जिनकी आँखें, कान, हाथ, पाँव ठीक नहीं है। वे अपने घरों से विश्वास और प्रत्याशा के साथ बाहर आये, जो अपने बीमार बंधुओं को लेकर आये क्योंकि वे विश्वास करते थे।

वे विनम्र थे। अपनी ओर से अनेक कोशिशे करने के बावजूद, असंभवता के चट्टानों पर टकराते हुए भी नहीं टूटकर आशा के साथ आए। मदद माँगना कमज़ोरी नहीं अपनी शक्ति ही है, यह बात वे समझे और उन्होंने मदद के लिए प्रार्थना की, आशा के साथ प्रार्थना की।

आज की कहानी का शतपति उनमें से एक है। उसे येसु की शक्ति पर विश्वास था, और उसे यह विश्वास था कि येसु उसके लिए करेगा। उसी तरह के विश्वास की कमी अकसर हममें होती है।

येसु शतपति का विश्वास देखकर चकित हो जाते हैं और कहते हैं– "इस्त्रायेल में भी मैंने किसी में इतना दृढ़ विश्वास नहीं पाया।" एक बार और हम येसु को आश्चर्य चकित होते देखते है। लेकिन वह विश्वास पर नहीं अविश्वास पर है, वह भी अपने ही नगर में, अपने ही लोगों के बिच में–(मारकुस 6:6) हम अपने आप को येसु के अपने लोग मानते हैं। क्या वह हमारे विश्वास पर या अविश्वास पर आश्चर्य चकित होंगे।

विश्वास हमारे लिए, हमारे साथ वो करने देता है जो हम अकेले नहीं कर सकते हैं।

Fr. James ML CMI